

संकटमोचन हनुमानाष्टक अर्थ सहित

मत्तगयन्द छन्द • पाठ: गीता प्रेस, गोरखपुर • अर्थ: hanumanchalisapdf.in

हर पद की अंतिम पंक्ति का अर्थ: हे कपि (हनुमान जी), संसार में कौन नहीं जानता कि आपका नाम संकटमोचन है, यानी संकट दूर करने वाले?

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

अर्थ: बचपन में आपने सूर्य को निगल लिया, तो तीनों लोकों में अँधेरा छा गया। इससे सारा संसार डर गया, और यह संकट किसी से दूर नहीं हो रहा था। तब देवताओं ने आकर विनती की, और आपने सूर्य को छोड़कर उनका कष्ट दूर किया।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ २ ॥

अर्थ: बालि के डर से वानरराज सुग्रीव पर्वत पर रहते थे, और उन्होंने महाप्रभु श्रीराम को रास्ते से जाते देखा। महामुनि (मतंग) के शाप के कारण बालि उस पर्वत पर नहीं आ सकता था; सुग्रीव चौंकर सोचने लगे कि अब क्या उपाय करें। तब आप ब्राह्मण का रूप धरकर महाप्रभु को ले आए और अपने दास का शोक दूर किया।

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ३ ॥

अर्थ: आप अंगद के साथ सीता जी की खोज में गए। वानरराज ने यह कहा था कि जो सीता जी की खबर लाए बिना यहाँ कदम रखेगा, वह हमसे जीवित नहीं बचेगा। सब समुद्र के किनारे खोजते-खोजते थक गए, तब आपने सीता जी की खबर लाकर सबके प्राण बचाए।

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ४ ॥

अर्थ: रावण ने सीता जी को बहुत डराया, और सब राक्षसियों से कहा कि वे सीता जी का शोक दूर करें (उन्हें मना लें)। उसी समय, हे महाप्रभु हनुमान जी, आपने वहाँ जाकर बड़े-बड़े राक्षसों को मारा। सीता जी अशोक के पेड़ से आग माँग रही थीं, तब आपने प्रभु की अँगूठी देकर उनका शोक दूर किया।

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ॥
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ५ ॥

अर्थ: रावण के पुत्र (मेघनाद) का बाण लक्ष्मण जी की छाती में लगा, और वे प्राणहीन-से हो गए। तब आप वैद्य सुषेण को उनके घर समेत ले आए, और हे वीर, आपने द्रोण पर्वत उखाड़ लिया। संजीवनी लाकर वैद्य के हाथ में दी, और इस तरह आपने लक्ष्मण जी के प्राण बचाए।

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ॥

आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ६ ॥

अर्थ: रावण की ओर से छल का युद्ध हुआ, और सब पर नागपाश डाल दिया गया । श्रीरघुनाथ जी समेत सारी सेना मूर्छित हो गई; यह भारी संकट था । तब, हे हनुमान जी, आप गरुड़ जी को ले आए, जिन्होंने बंधन काट दिए, और आपने यह बड़ा डर दूर किया ।

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।

देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥

जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ॥

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ७ ॥

अर्थ: जब अहिरावण श्रीरघुनाथ जी को उनके भाई समेत पाताल ले गया, और देवी की विधि से पूजा करके सबने मिलकर उनकी बलि देने की सलाह की, तब आप वहाँ जाकर उनके सहायक बने, और अहिरावण को उसकी सेना समेत मार डाला ।

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।

कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ॥

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥

अर्थ: हे वीर महाप्रभु, आपने देवताओं के बड़े-बड़े काम किए हैं; सोचकर देखिए, मुझ गरीब का ऐसा कौन-सा संकट है जो आपसे दूर न हो सके? हे महाप्रभु हनुमान जी, हमारा जो भी संकट हो, उसे जल्दी हर लीजिए ।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।

बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

अर्थ: आपकी लाल देह पर लाली शोभा देती है, और आपने लाल लँगूर धारण किया है । आपकी देह वज्र जैसी है, और आप दानवों का नाश करते हैं । हे वीर कपि, आपकी जय हो, जय हो, जय हो ।

पुस्तक में अंतिम पंक्ति पहले पद के बाद ही पूरी छपी है, बाकी पदों के बाद “को०” लिखा है; यहाँ वह हर पद के बाद पूरी लिखी गई है ।